Peer Reviewed
International Standard Book
Number (ISBN) Book

Vinayak
BOOKS

# संगीत मंजरी

## Sangeet Manjari

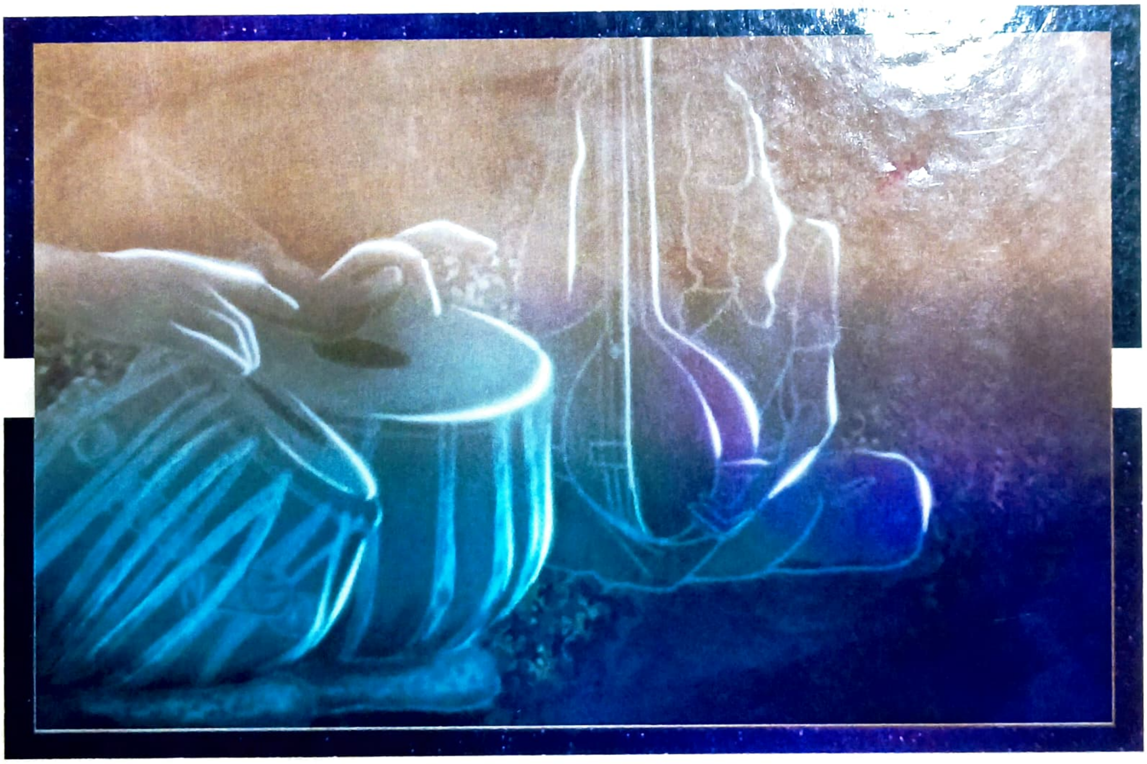

डॉ. गौरव शुक्ल
डॉ. स्वाति शर्मा

श्री विनायक पब्लिकेशन, आगरा

प्रकाशक

**श्री विनायक पब्लिकेशन**

229, शास्त्रीपुरम, सिकन्दरा, आगरा–282 007 (उ. प्र.)

मोबाइल : 9412458170, 9893635398

E-mail : info@vinayakpublishers.com

shreevinayakpublication2009@gmail.com

Visit us : www.vinayakpublishers.com

© सम्पादकगण

**प्रथम संस्करण : 2020**

**Code : R0012**

**ISBN : 978-81-948717-8-1**

**मूल्य : ₹ 499/-**

**शब्द संयोजन एवं मुद्रक : श्री विनायक पब्लिशिंग यूनिट, आगरा**

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, mechanical, photocopying recording, or otherwise, without prior written permission of the publisher. Vinayak has obtained all the information in this book from the sources believed to be reliable and true. However, Vinayak or its editors or Author don't take any responsibelity for the absolute accuracy of any information published and the damages or loss suffered thereupon. All disputes subject to Agra Jurisdiction only.

For further information about the books published By Vinayak kindly lon on to www.vinayakpublishers.com or email to shreevinayakpublication 2009@gmail.com

# अनुक्रमणिका


| क्रं. | अध्याय नाम | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 1. | वर्तमान समय में संगीत शिक्षण के प्रभावशाली आयाम | 13 |
| 2. | वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य में संगीत-शिक्षण का स्वरूप | 18 |
| 3. | नाद विमर्श (संगीतशास्त्र एवं योगदर्शन के विशेष संदर्भ में) | 22 |
| 4. | नाद साधना | 27 |
| 5. | वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य में संगीत शिक्षण का स्वरूप | 31 |
| 6. | डॉ. सत्यभान शर्मा जी की दृष्टि से : पुष्टिमार्गीय शिक्षण पद्धति और आधुनिक शिक्षण पद्धति का विश्लेषणात्मक अध्ययन | 36 |
| 7. | वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य में संगीत शिक्षण का स्वरूप | 40 |
| 8. | वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य में संगीत शिक्षण का स्वरूप | 44 |
| 9. | वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य में संगीत शिक्षण का स्वरूप | 47 |
| 10. | राग-रागिनीयों का चित्रों से संबंध | 51 |
| 11. | वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य में संगीत शिक्षण का स्वरूप | 59 |
| 12. | वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य में संगीत शिक्षण का बदलता स्वरूप और संभावनायें | 62 |
| 13. | वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य में संगीत शिक्षण का स्वरूप | 68 |
| 14. | वर्तमान परिप्रेक्ष्य में संगीत व्यवसाय के दृष्ट्व्य होते विभिन्न आयाम | 71 |
| 15. | वर्तमान समय में संगीत शिक्षण का बदलता स्वरूप | 82 |
| 16. | वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य में संगीत शिक्षण का स्वरूप | 86 |





| | | |
|---|---|---|
| 17. | प्राचीन एवं आधुनिक संगीत शिक्षण पद्धति का तुलनात्मक अध्ययन | 90 |
| 18. | वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य में संगीत शिक्षण का स्वरूप | 98 |
| 19. | वर्तमान में शास्त्रीय संगीत शिक्षा का स्वरूप (ख्याल के विशेष सन्दर्भ में) | 101 |
| 20. | लोकदेवता पाबूजी की फड़ और उसकी गेयता | 105 |
| 21. | अष्टांग योग साधना एवं संगीत साधना का अंत: सम्बन्ध | 112 |
| 22. | वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य में संगीत शिक्षण का स्वरूप | 118 |
| 23. | आधुनिक सन्दर्भ में संगीत की परिभाषा | 123 |
| 24. | महाराष्ट्र के विभिन्न भक्तिसम्प्रदाय की परम्परा एवं शैली | 125 |
| 25. | Aspects of Online Music Education System in Present Perspective | 131 |
| 26. | Master's Presence and the Garment of Tradition | 137 |
| 27. | Music Teaching Techniques | 143 |
| 28. | Efficiancy of Music in Education | 146 |
| 29. | Is known for the ages for its performing arts-whether it may be dance, music, and theatre or modern art form. Indians are transcending Music and Musical instruments depicted in Indian Sculpture and Iconography | 149 |
| 30. | डिजिटल प्रौद्योगिकी के दौर में भारतीय शास्त्रीय संगीत : एक विश्लेषण | 159 |
| 31. | हिन्दी फिल्म संगीत में शास्त्रीय संगीत की भूमिका | 166 |
| 32. | वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य में शिक्षण का स्वरूप | 175 |

# 23

# वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य में संगीत शिक्षण का स्वरूप

*डॉ. अपर्णा चाचोंदिया*
सहायक प्राध्यापक (नृत्य)
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर
उत्कृष्ट महाविद्यालय सागर (मध्य प्रदेश)

संसार की किसी भी विद्या या कला में शिक्षण का सर्वाधिक महत्व है। यदि शिक्षण या प्रशिक्षण की प्रक्रिया प्रचलित न होती तो सम्भवत: सारी विद्याएँ एवं कलाएँ लगभग समाप्त हो जातीं। इसका प्रमुख कारण यही है कि किसी भी कला या विद्या का ज्ञाता यदि उसका प्रशिक्षण देकर उसे आगे न बढ़ाए तो ये कलाएँ उसी व्यक्ति के साथ समाप्त हो जाती हैं अत: किसी भी कला को जीवन्त बनाए रखने के लिए उसे आगे की पीढ़ी को सौंपना अनिवार्य है। शिक्षण की प्रक्रिया को सफल बनाने के लिए गुरु एवं शिष्य दोनों का उस प्रक्रिया में सम्मिलित होना अनिवार्य है। इस प्रक्रिया में गुरु की भूमिका शिक्षा प्रदान करने की होती है एवं शिष्य की भूमिका शिक्षा को ग्रहण करने की होती है। इन दोनों में से किसी एक के भी अभाव में शिक्षण की प्रक्रिया सम्पन्न होना संभव नहीं है।

कला का सम्पूर्ण भविष्य इसके वर्तमान में उचित रखरखाव, सन्तुलन व शिक्षण पर ही निर्भर है। अत: कला में छिपे सभी तत्वों का बारीक निरीक्षण, ज्ञान व कला को सही अर्थ देना अत्यन्त आवश्यक है। वर्तमान समय में संगीत शिक्षण के स्वरूप को जानना है, तो हमें सर्वप्रथम अतीत के द्वार खोलने होंगे। संगीत में शिक्षण प्रक्रिया के प्रारम्भिक स्वरूप का विधिवत अध्ययन करते हुए हम प्राचीन काल में क्रमश: वर्तमान





ओर आगे बढ़ेंगे, क्योंकि वर्तमान का आधार अतीत से जुड़ा होता है। प्राचीन शास्त्रों का अध्ययन करने पर हम यह कह सकते हैं कि वैदिक काल से ही गुरु शिष्य परम्परा अस्तित्व में थी एवं हर युग) सतयुग, त्रेता युग एवं द्वापर युग (में गुरु शिष्य के अनेकों उदाहरण दृष्टिगत होते हैं स्वयं भगवान ने भी जब पृथ्वी पर मानव का अवतार लिया तो वे भी विद्या अध्ययन के लिए गुरुकुल में रहे। प्राचीन काल में अपना घर छोड़कर गुरु के आश्रम में रहकर ही शिक्षा प्राप्त की जाती थी, जिसे गुरुकुल कहा जाता था। अभिभावकों का गुरुकुल के नीति नियमों में कोई हस्तक्षेप नहीं रहता था। गुरुकुल में केवल गुरु के द्वारा निर्धारित नियमों का ही पालन अनिवार्य रूप से करना पड़ता था। गुरु के द्वारा शिष्यों को पर्याप्त समय देकर शिक्षण दिया जाता था। शिष्य भी कठोर साधना के द्वारा दी हुई विद्या को आत्मसात किया करते थे। महर्षि बाल्मीकि द्वारा लव-कुश को संगीत शिक्षण दिया गया। अर्जुन द्वारा उत्तरा को नृत्य की शिक्षा दी गई।

गुरुकुल की शिक्षा परम्परा में सबसे विशेष बात थी शिक्षा के योग्य वातावरण। अनुकूल वातावरण में विद्यार्थियों को शिक्षा ग्रहण करने में न केवल सुविधा होती थी अपितु उनका ध्यान भी शिक्षा पर केन्द्रित रहता था। घर एवं परिजनों से दूर रहकर विद्यार्थी प्रतिपल अपने गुरु की नजरों में रहते थे और गुरु अपने शिष्यों की प्रत्येक गतिविधि पर नजर रखते हुए आवश्यकतानुसार उनमें सुधार करते रहते। अपनी विद्या या कला में दक्षता प्राप्त करने के बाद विद्यार्थी गुरुकुल से लौटते थे। शिक्षा पूर्ण होने पर गुरु दक्षिणा देने की परम्परा थी। गुरु अपनी शिक्षण प्रक्रिया में पूर्णता स्वतन्त्र होते थे वे किसी के दबाव में शिक्षण की प्रक्रिया को सम्पन्न नहीं करते थे। उस समय की सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि शिष्यों को उनके गुरु के नाम से जाना जाता था। शिष्य आजीवन अपने गुरु का सम्मान करते थे।

मध्यकाल में तानसेन ने स्वामी हरिदास को अपना गुरु बनाया। नवाब वाजिद अली शाह ने ठाकुर प्रसाद जी को अपना नृत्य गुरु बनाया। इस समय संगीत में गुरु-शिष्य की जोड़ी के ऐसे अनेकों उदाहरण मिलते हैं इस काल में कला गुरुओं ने दरबारों में अपनी कला का प्रशिक्षण दिया वहाँ भी उन्हें प्रतिष्ठित पद प्राप्त हुआ। गुरुओं द्वारा शिष्यों को कठोर अभ्यास करवाया जाता था। अपनी कला में परिपूर्ण व परिपक्व शिष्य हमेशा हर चुनौती के लिए तैयार रहते। दरबारों में अनेकों प्रदर्शन और प्रतिस्पर्द्धाओं का आयोजन होता रहता था। संगीत जगत में घरानेदारी आ चुकी थी और शिक्षण प्रक्रिया के दायरे भी बन गए। हर घराने की अपनी विशेषताएँ होती थी। गुरु केवल अपने पुत्रों-पुत्रियों और शिष्यों को घरानेदारी की शिक्षा देने लगे और वंश परम्परा चलने लगी। कलाकार घराने विशेष की कला के प्रतिनिधि कलाकार बनने लगे।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् के काल में संगीत शिक्षण के स्वरूप में बहुत अन्तर आ गया। इसका प्रमुख कारण था। संस्थागत शिक्षण प्रणाली संगीत को भी अन्त विषयों की भाँति पाठ्यक्रम में शामिल कर लिया गया। पाठ्यक्रम के आधार पर ही संस्थाओं में प्रशिक्षण प्रारम्भ हो गया। इसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार के प्रभाव संगीत शिक्षण के स्वरूप पर दिखाई देते हैं।,

सबसे अच्छी बात तो यह थी कि संगीत की शिक्षा प्राप्त करना जनसामान्य के लिए सुलभ हो गया था। गुरु के स्थान पर शिक्षक होते थे। अलग-अलग विषयों के शिक्षक भी अलग-अलग ही होने लगे। संस्था में प्रवेश के लिए घर छोड़ने की आवश्यकता नहीं थी। प्रायोगिक पक्ष के साथ-साथ सैद्धान्तिक पक्ष पर भी पर्याप्त ध्यान दिया गया। इन परिवर्तनों से शिष्य निष्पादन प्रक्रिया एवं उसकी गुणवत्ता पर प्रभाव पड़ता स्वाभाविक था। शिक्षकों का दायित्व केवल शिक्षण एवं शिष्य पर केन्द्रित नहीं था। संस्था के नियमों पर आधारित शिक्षण प्रणाली प्रचलन में आ चुकी थी। जिसके कारण शिक्षक पूर्ण रूप से स्वतन्त्र होकर शिक्षण प्रक्रिया नहीं कर पाते थे उनके ऊपर अन्य कार्य भार और दबाव भी रहने लगे। संस्थागत संगीत शिक्षण प्रणाली में न केवल विषय-वस्तु अपितु समय सीमा का भी निर्धारण हो गया। पाठ्यक्रम को एक निश्चित समय-सीमा में पूर्ण करना अनिवार्य हो गया। जिसके बाद प्रत्येक वर्ष परीक्षा आयोजित होने लगी परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद ही अगली कक्षा में प्रवेश दिया जाता। इस समय सीमा के बंधन के कारण शिक्षक का ध्यान पाठ्यक्रम पर ज्यादा केन्द्रित हो गया, क्योंकि पाठ्यक्रम को निर्धारित समय पर पूर्ण करना अनिवार्य हो गया। जैसे-तैसे पाठ्यक्रम तो पूरा हो जाता किन्तु अभ्यास में कमी रह जाती। इस तरह कला की शुद्धता और सूक्ष्मता की कमी शिष्यों के प्रदर्शन में दिखाई देने लगी। संगीत शिक्षण के स्वरूप में भी सीमितता आने लगी। इस समय भी गुरु शिष्य परम्परा का अस्तित्व समाप्त नहीं हुआ था। बहुत से कला गुरु पारम्परिक संगीत प्रशिक्षण भी अपने शिष्यों को प्रदान करते जा रहे थे। इस तरह संगीत जगत में गुरु शिष्य परम्परा और संस्थागत शिक्षण प्रणाली दोनों ही विद्यमान है।

वर्तमान समय में संगीत शिक्षण प्रणाली देखें तो संस्थागत शिक्षण प्रणाली अधिक प्रचलन में आ चुकी है। फिर भी यह कहना गलत नहीं होगा कि संगीत एक ऐसी विधा है जिसमें गुरु शिष्य परम्परा हमेशा विद्यमान रहेगी। संस्थागत शिक्षण प्रणाली में भी कम से कम संगीत विषय के विद्यार्थी आज भी अपने कला गुरु का विशेष सम्मान करते हैं। गुरु पूर्णिमा के दिन अपने गुरु की पूजा करते हैं। श्रीफल और पुष्प माला से उनका अभिनन्दन करते हैं एवं आर्शीवाद ग्रहण करते हैं।



आज के संगीत शिक्षण के स्वरूप में प्रयोग और सम्भावनाओं के द्वारा खुले हुए हैं। बस शर्त यही है कि संगीत के शास्त्रीय नियमों के दायरे में रहकर ही किसी भी तरीके के प्रयोग अत्यंत सावधानी पूर्ण ढंग से किए जाएँ एवं इन प्रयोगों की सार्थकता भी अपेक्षित है। प्रयोग हमेशा अपने गुरुजनों के कुशल मार्गदर्शन में किए जायें तो अच्छा है। हमें संगीत के स्वरूप को विकसित करना है विकृत नहीं।

आज हमें अपनी प्रतिभा को प्रकाशित करने के लिए अवसरों की कोई कमी नहीं है। संगीत के प्रायोगिक एवं सैद्धान्तिक दोनों ही पक्षों पर पर्याप्त ध्यान दिया जाता है। कलाकारों के लिए मंच प्रदर्शन के पर्याप्त अवसर हैं। अन्य महत्वपूर्ण विषयों की तरह संगीत में भी उच्च शिक्षा प्राप्त की जा सकती है। स्नातक, स्नातकोत्तर आदि डिग्रियों के अलवा पी. एच. डी. की उपाधि भी संगीत में दी जाती है। प्रायोगिक पक्ष एवं सैद्धान्तिक पक्ष को और भी समृद्ध और सुदृढ़ बनाने के लिए संगीत की कार्यशाला, सेमिनार, वेबीनार आदि का आयोजन भी किया जाता है। साहित्यिक पक्ष को समृद्ध करने के उद्देश्य से आलेख, पुस्तक लेखन, शोधपत्र, समीक्षा आदि अनेक गतिविधियाँ संगीत जगत में चलती रहती हैं। वर्तमान संगीत शिक्षण के स्वरूप में बहुत विविधता आ चुकी है। प्रतिस्पर्धा के इस युग में संगीत के विद्यार्थी अपनी पारम्परिक संगीत शिक्षा के अतिरिक्त पर्याप्त तकनीकी ज्ञान भी रखते हैं। संगीत से जुड़े हर पक्ष में रोजगार के अवसर तलाश कर लेते हैं। जैसे—मंच व्यवस्था, मंच सज्जा, ध्वनि व्यवस्था, प्रकाश व्यवस्था, रूप सज्जा, वेशभूषा, कोरियोग्राफी इत्यादि संगीत प्रस्तुति के लिए मंच की आधारभूत आवश्यकताएँ हैं जिन पर अब पर्याप्त ध्यान दिया जाता है। इनके प्रशिक्षण सम्बन्धी कोर्स भी शिक्षा में शामिल हैं। सरकार द्वारा कलाकारों में प्रोत्साहन एवं आर्थिक सहायता हेतु अनेकों छात्रवृत्तियाँ मिलती हैं। पारम्परिक वरिष्ठ कलाकारों के लिए भी संस्कृति मंत्रालय द्वारा फैलोशिप मिलती है। सरकारी एवं निजी संगीत संस्थानों में संगीत शिक्षकों एवं संगतकार आदि को नौकरी के अवसर प्राप्त हैं। विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में भी संगीत शिक्षकों का पद निश्चित है। बहुत सारी प्रतियोगी परीक्षाओं में भी संगीत के विद्यार्थी सफल होकर अनेकों उच्च पदों पर आसीन हैं।

अभी इस समय दुनिया कोविड-19 नामक वैश्विक महामारी से जूझ रही है। जिसका प्रभाव समग्र जनजीवन पर पड़ रहा है लॉकडाउन के कारण सारी गतिविधियाँ शिथिल हो गई हैं। शैक्षणिक गतिविधियाँ भी लॉकडाउन से बहुत प्रभावित हुई हैं। शिक्षा जगत के जागरुक लोग हाथ पर हाथ धरे नहीं बैठे उन्होंने इसका विकल्प भी निकाला है ऑनलाइन प्रशिक्षण वैसे तो काफी समय से ऑनलाइन प्रशिक्षण का

उपयोग हो रहा है किन्तु वर्तमान परिस्थिति में इस तरीके से प्रशिक्षण देना शिक्षकों की मजबूरी है। सामूहिक रूप से छात्रों को एक जगह एकत्रित करके शिक्षण देना लॉकडाउन में सम्भव नहीं है। इसलिए शिक्षक और विद्यार्थी अपने-अपने घरों में रहते हुए शिक्षण प्रक्रिया सम्पन्न कर रहे हैं। जैसे कहा जाता है कि आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है। इसलिए वर्तमान की आवश्यकतानुसार कई प्रयोग किए जा रहे हैं। ऑनलाइन प्रशिक्षण को प्रभावी तरीके से प्रस्तुत करने के लिए बहुत सारे ऐप हैं, जिनका प्रयोग वर्तमान शिक्षण प्रणाली में किया जा रहा है जिससे विद्यार्थियों को अधिक से अधिक लाभ प्राप्त हो।

संगीत के क्षेत्र में ऑनलाइन प्रशिक्षण एक चुनौतीपूर्ण कार्य है क्योंकि संगीत में सैद्धान्तिक पक्ष के साथ-साथ प्रायोगिक पक्ष का भी प्रशिक्षण बहुत अनिवार्य है। प्रायोगिक पक्ष का प्रशिक्षण ऑनलाइन देने के परिणाम अधिक सफल नहीं हो पा रहे हैं, क्योंकि इस प्रशिक्षण में संगीत के लिए अनुकूल वातावरण आवश्यक है। सभी विद्यार्थी अपने-अपने घरों में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं और सभी के घरों का वातावरण संगीत के लिए अनुकूल होना सम्भव नहीं है। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि संगीत शिक्षण प्रक्रिया में गुरु और शिष्य का भौतिक रूप से एक-दूसरे के समक्ष उपस्थित रहना आवश्यक है। गुरु के द्वारा समय-समय पर त्रुटि सुधारना और गुरु की उपस्थिति का भय छात्रों का ध्यान एक जगह केन्द्रित रखता है। ऑनलाइन प्रशिक्षण में विद्यार्थी की हर गतिविधि पर नजर रखना सम्भव नहीं हो पाता। नेटवर्क की समस्या होने पर तारतम्यता भंग होने से प्रशिक्षण अधिक प्रभावी नहीं हो पाता। हमें पहली बार लॉकडाउन समय का अनुभव हुआ, जिसके लिए हम पहले से मानसिक रूप से तैयार नहीं थे। हो सकता है यह समय हमें बहुत कुछ सिखा जाए और संगीत शिक्षण के स्वरूप में क्रान्तिकारी परिवर्तन दे जाए। अंतत: यही कहना होगा कि समय के साथ सामंजस्य करते हुए संगीत शिक्षण को निरन्तर रखने का हर सम्भव प्रयास करना चाहिए एवं इसकी गुणवत्ता को भी ऐसी विषम परिस्थितियों के प्रभाव से बचाने का प्रयास करना होगा।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

**कथक**– अक्षरों की आर. सी.–डॉ. ज्योति बक्शी, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, रवीन्द्र नाथ ठाकुर मार्ग, बाणगंगा, भोपाल, मध्य प्रदेश।

●●

**23**

# आधुनिक सन्दर्भ में संगीत की परिभाषा

*डॉ. रेखा मेनारिया*

मानव-जीवन में संगीत का शाश्वत मूल्य है। शाश्वत मूल्य का अर्थ यह है कि न कभी वह घटता है और न कभी बढ़ता है। वह सदा अपरिवर्तनीय स्थिति में रहने वाला मूल्य है। प्रत्येक युग में उसकी समान रूप से आवश्यकता रहती है। अतएव संगीत को प्राचीन युग में किसी अन्य सन्दर्भ में देखा जाना और आज के सन्दर्भ में किसी नए दृष्टि कोण से पर खा जाना कोई विशेष अर्थ नहीं रखता। पं. विश्व मोहन भट्ट ने संगीत को परिभाषित करते हुए जो कहा है कि संगीत श्रोता और वादक की आत्मा को पूर्णत निर्मल, स्वच्छ व पारदर्शी बना ने वाला साधन है, अक्षरश: सटीक है। इस देश की सभ्यता और संस्कृति की जो पुरातन परम्पराएँ रही हैं, उनसे स्पष्ट प्रमाणित होता है कि संगीत और विज्ञान के क्षेत्र में भारत ने अपने आरम्भिक काल में ही उन ऊँचाईयों को प्राप्त कर लिया था, जिनकी ओर अन्य अनेक देश अब प्रस्थान करते दिखाई दे रहे हैं। अत: संगीत को लेकर यह कहना सर्वथासटीक और समीचीन है कि संगीत के प्रति भारत का अपना दृष्टि कोण रहा है, और उसका मूल्य जहाँ आध्यात्मिकता के उन्नयन को लेकर रहा है, वहाँ ऐहिक जीवन को आनन्दित करने का लक्ष्य लेकर भी।

संसार के सभी देशों में संगीत को भावनाओं की भाषा कहा गया है, तथा भावनाएँ धर्म एवं जातियों में एक समान होती हैं। अत: हम किसी भी देश, धर्म अथवा जाति के संगीत में भावनाओं की अभिव्यक्ति का रूप एक जैसा पाते हैं। सुख-दुख, प्यार,